प्रथम अध्याय

'सुदर्शन भाटिया का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'

प्रथम अध्याय

'सुदर्शन भाटिया का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'

1.1 व्यक्तित्व :

किसी भी बहुआयामी साहित्यकार के व्यक्तित्व को समझे बिना उनके कृतित्व का अध्ययन नहीं किया जा सकता। अतः उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालकर उसकी सही पहचान कराना आवश्यक है। साहित्यकार के व्यक्तित्व का प्रतिबिंब उसकी कृतियों में देखा जा सकता है। साहित्यकार के साहित्य को समझने तथा उसके साहित्य के मूल तत्त्वों तक पहुँचने के लिए उसके जीवन परिचय को देखना आवश्यक होता है। अतः सुदर्शन भाटिया का व्यक्तित्व जानना आवश्यक है, जो निम्नांकित है -

हिंदी साहित्य जगत में सुदर्शन भाटिया का उदय एक कथाकार के रूप में हुआ है। हिमाचल प्रदेश के सुदर्शन भाटिया जी सेवानिवृत्त अभियंता हैं। ''उन्होंने अब तक 9 उपन्यास, 10 कहानी संग्रह, 10 लघुकथा संग्रह लिखे हैं। इतना ही नहीं उन्होंने अन्य विषयों पर सैकडों पुस्तकों की रचना की हैं, वे हैं - संस्कृति उत्थान, देशभक्ति, राष्ट्र-निष्ठा, राष्ट्र गौरव, इतिहास, धर्म, जीवनी, व्यावहारिक विज्ञान, प्रेरक घटनाएँ, राजनीति, पर्यावरण प्रदूषण, विज्ञान, सामान्य ज्ञान क्विज, प्राकृतिक चिकित्सा, स्वास्थ्य, आधुनिक साहसिक व्यक्तित्व, शिशुपालन, स्त्री-शिक्षा, बागवानी, नारी सौंदर्य, योग-शिक्षा आदि अनेक विषयों पर लेखन किया है।''[1]

हिमाचल प्रदेश के पालमपुर में रहनेवाले भाटिया विद्युत विभाग से अधिशाषी अभियंता के पद से सेवानिवृत्त हुए, जब कि उनकी पत्नी जगदीश कौर उप जिला शिक्षा अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त हैं।

भाटिया के आवास का निजी कक्ष मिनी पुस्तकालय से कम नहीं है। विभिन्न विषयों पर लिखी पुस्तकें, हिंदी-अंग्रेजी के दैनिक समाचार पत्र, पुरस्कार में मिले स्मृतिचिह्न और फ्रेम में सजे प्रशस्ति पत्रों से भरी शैल्फें उनकी साहित्यिक अभिरूचि का आभास करवाती है।

सुदर्शन भाटिया ने अपने भाईयों के साथ पैतृक घर गोहाना (हरियाणा) में बसना था, पर पालमपुर में अधिशाषी अभियंता (विद्युत) के पद पर कार्य करते हुए उन्हें यह स्थान इतना पसंद

---

1. राजेश सूर्यवंशी - 'हिमाचल रिपोर्टर, पालमपुर (पत्रिका) तिथि - 27/12/2009

आया कि उन्होंने यही परिवार सहित बसने के लिए आशियाना बनाने का मन बना लिया। पालमपुर की नवनिर्मित फ्रेंन्डस कालोनी में अपना घन बनाकर वे लेखन के क्षेत्र में तन-मन से समर्पित हो गए। उन्होंने सन 1996 में लिखना शुरू किया और 6 वर्षों के अल्पकाल में 61 पुस्तकें लिखकर लेखन के इतिहास में बुलंदियों को छुआ ही, साथ ही अपने लेखन में साहित्य की बहुविध विधाओं - कहानी, लघुकथा, उपन्यास, व्यंग्य आदि में लेखनी चलायी है।

"सिर्फ पुस्तक लेखन ही नहीं सुदर्शन भाटिया की देश की215 पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ भी प्रकाशित हुई हैं। हिमाचल से प्रकाशित दैनिक समाचार पत्र 'दिव्य हिमाचल' में उन्होंने 'इधर भी है शब्द' शीर्षक से 117 लेखकों के साक्षात्कार प्रकाशित करवाए हैं। उनकी 1400 लघुकथाएँ प्रकाशित हुई है, जो लघुकथा लेखन में एक रिकार्ड है। एक राष्ट्रीय दैनिक में उन्होंने दो वर्ष तक रिपोर्टिंग भी की। वर्तमान में भी वे एक हिंदी साप्ताहिक के लिए कार्य कर रहे हैं।"[1]

"हिमाचल से जो लेखक राष्ट्रीय स्तर पर अपना सक्षम, सार्थक व समाजोपेक्षी अप्रतिम योगदान दे रहे हैं, श्री सुदर्शन भाटिया उस अग्रिम पंक्ति में एक हैं। मात्र अर्ध्ददशक में दो सौ से भी अधिक प्रेरक अन्वेषणा-प्रधान पुस्तकें प्रकाशित कर इन्होंने एक 'रिकार्ड' बनाया है। इनके अतिरिक्त इस रचनाकार के पैंसठ से ज्यादा विशाल ग्रंथ या तो प्रकाशकों के पास प्रकाशनार्थ प्रेषित हैं या स्वयं श्री भाटिया के पास संरक्षित हैं। देशभर की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में अब तक उनकी तीन हजार से भी अधिक रचनाएँ स्थान पा चुकी हैं। इनकी पहली रचना सन 1953 में 'नवभारत टाईम्स' में प्रकाशित हुई थी।"[2]

अपनी साहित्यिक प्रेरणा के संबंध में भटिया जी का कहना है इन्हें सन 1994 में डॉ.सुशीलकुमार फुल्ल ने उत्साहित किया था। फिर तो साहित्य सृजन की जो धारा बहीं, वह आज भी अनवरत जारी है।"[3]

भाटिया के ढेर सारे प्रकाशनों को देखकर आश्चर्य होता है, कि कैसे इन्होंने इतना विशाल लेखन कब किया होगा और फिर अल्पसमय में उसे प्रकाशित भी करवाया। श्री. भाटिया का प्रकाशन फलक बहुआयामी हैं। इसमें गवेषणा-परक इतिहास हैं, तो ज्ञान विज्ञान भी हैं, योग और प्राकृतिक चिकित्सा की पुस्तकें हैं तो बीसियों कथा-कहानी संग्रह भी सम्मिलित हैं। इनके

1. महानगर कहानियाँ - /125 / फरवरी, 2002.
2. डॉ. गिरिधर योगेश्वर - गिरिराज साप्ताहिक, 10-16 फरवरी, 2010.
3. डॉ. गिरिधर योगेश्वर - वही

अतिरिक्त महापुरुषों के जीवन व आधुनिक साहसिक व्यक्तित्वों पर कई कृतिया हैं। यहीं नहीं लघुकथाएँ, बोधकथाएँ, प्रेरक प्रसंग, देशभक्ति, शिशुपालन, स्त्री-शिक्षा व नारी सौंदर्य पर भी इनका विपुल साहित्य है। भाटिया मूलत: कथाकार हैं, अत: इनकी सर्जना में अनेक स्तरीय सामाजिक, ऐतिहासिक व व्यंग्यात्मक उपन्यास लेखक की साहित्यिक पहचान है। लगता नहीं कि जीवन का कोई भी महत्त्वपूर्ण पक्ष इनकी लेखनी से अछूता रह गया है। सुदर्शना भाटिया की सब पुस्तकें दिल्ली के नामी-गिरामी प्रकाशकों तथा किताबघर, पुस्तक महल, क्षितिज, संगीता प्रकाशन, आरोग्यनिधि प्रकाशन इत्यादी द्वारा प्रकाशित होकर देशभर के सुधी पाठकों तक पहुँची हैं। वैसे तो लेखक अपनी प्रत्येक पंक्ति को अनमोल मानता है तो भी अपनी दो शताधिक कृतियों में जिन तीन को ये सर्वश्रेष्ठ मानते हैं, उनके नाम है - (1) पवित्र गंगा भगिरथी, (2) वनवासी राम, (3) वनवासी जानकी। इनकी पहली पुस्तक 'कल्लो' वर्ष 1996 में प्रकाशित हुई थी। सन 1998 में प्रकाशित इनकी कृति 'काली लडकी' व अन्य कहानियाँ भी काफी चर्चित हुई। 'पंजाब केसरी' में 'इधर भी हैं शब्द' लेख-माला के माध्यम से उन्होंने हिमाचल के 116 से भी अधिक लेखकों की साहित्यिक देन को उजागर करने का प्रशंसनीय कार्य भी किया है।

सुदर्शन भाटिया अधिशाषी अभियंता आज से ही नहीं, बचपन से ही लिखते रहे हैं। उनका साहित्य सफर 42-34 वर्ष पुराना है। सन 1954-55 से यह नवभारत टाइम्स तथा अन्य समाचार पत्रों में छपते रहें। चूँकि उन्हें किसीसे भी मार्गदर्शन नहीं मिला, इसलिए कभी लिखते-लिखना छोड देते - दोबारा लिखना शुरू कर देते। रंग और तूलिका पर भी हाथ आजमाए। कई ईनाम पाए। पर यह शौक भी छूट गया। स्कूल समय में, शहर में कोई ऐसा कार्यक्रम नहीं होता, जिसमें सुदर्शन भाटिया भाषण प्रतियोगिता में भाग नहीं लेते। सन 1996 में सुदर्शन भाटिया की तीन पुस्तकों का विमोचन पालमपुर के होली मंच पर हिमाचल प्रदेश मंत्रीमंडल के दो मंत्रियों के कर-कमलों से हुआ। तभी लोगों को पता चला कि एक लंबे समय से उनके बीच रहने वाले विद्युत इंजिनिअर श्री. भाटिया एक कवि, कहानीकार, उपन्यासकार तथा व्यंग्यकार भी हैं।"[1]

अत: सुदर्शन भाटिया का जीवन परिचय इसप्रकार हैं -

1.1.1 जन्म :- सुदर्शन भाटिया का जन्म 5 जून 1940 को अविनाशी लाल भाटिया के यहाँ चक्क गाँव 56, तहसील लालियां, जिला झंग, सरगोधा (पाकिस्तान) में हुआ।

1. पालमपुर रिपोर्टर = मार्च 2, 1997.

1.1.2 माता-पिता :- सुदर्शन भाटिया की माता का नाम श्रीमती सीता देवी था और पिता का नाम श्री. अविनाशी लाल भाटिया था। पिता अच्छे व्यवसायी और जमींदार थे। जब पाकिस्तान से विस्थापित होकर यह परिवार पहले सोनीपत और फिर गोहाना (जिला रोहतक) में आ गया। तो आर्थिक तंगी ने घेर लिया। एक बडे जमींदार, एक बडे व्यापारी रह चुके पिता पाकिस्तान से जान बचाकर भागते समय कुछ खास अपने साथ नहीं ला सके। अब न जमीनें थी, न ही कोई व्यापारिक प्रतिष्ठान। क्लेम में जो जमीनें मिलीं, वे काफी बाद में, थी भी यमुनानगर / जगाधरी आदि में। यह तीन-चार वर्ष का समय परिवार पर पहाड की तरह टूटा था। जितना गांठ में था, उसका खत्म होना जारी रहा। पिता श्री ने सब्जी मण्डी में आढ़त का काम शुरू कर अपने पांव जमाने शुरू कर दिए।

बचपन :- सुदर्शन भाटिया जब दूसरी कक्षा में पढ़ते थे। तभी देश का बंटवारा हो गया। औरउनका परिवार गोहाना (हरियाणा) में बस गया। पाकिस्तान से आने के बाद वे जंगल से लकडी लाना, भैंसों की सेवा, उनको चराने ले जाना, उनके लिए घास लाना, घर के अन्य कामों में यथाशक्ति हर सदस्य हाथ बंटाया करता। स्कूल जाना तो संभव ही न था। 1947 से 1951 तकरीबन चार वर्ष तक आर्थिक कठिनाइयाँ बनी रही। 1951 में सब जमीनें, कारोबार, घर, नियमित आय के सभी साधन पूर्ववत होते नजर आए। तब जाकर इस परिवार के बच्चे स्कूल जाने लगे। सुदर्शन ने एक ही वर्ष में चार स्कूल बदल चौथी तक पढ़ाई कर ली। लेखन का शौक उन्हें बचपन से था, पर राजकीय सेवा में होने से वे लिख नहीं पाते थे। उन्होंने हर प्रकार का साहित्य पढ़ा है। उनके मन में जो विचार आया, उसे वह नोट कर लेते थे। अब वही विचार उनके लेखन का भाग बन गए हैं।

परिवार :- सुदर्शन भाटिया के दादा चौधरी वजीर चंद एक बड़े सम्मानित व्यक्ति थे। जिमींदारी में निपुण थें। सुदर्शन भाटिया के पिताजी श्री. अविनाशी लाल भाटिया एक बड़े जिमींदार तथा व्यापारी थें। माता श्रीमती सीतादेवी गृहिणी थी। सुदर्शन भाटिया के परिवार में पत्नी जगदीश कौर जो उपशिक्षा अधिकारी पद से सेवानिवृत्त हैं। उन्हें दो बेटियाँ और एक बेटा है। जो हिमाचल विद्युत बोर्ड में एस. डी. ओ. है। तीनों बच्चों की शादी हो चुकी हैं। भाटिया परिवार अपनी आध्यात्मिक खासियत के कारण 'श्रीराम शरणम्' मिशन से सहजता से जुड़ा था। जो क्रम अब भी जारी है। भाटियाजी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर रूहानियत की गहरी छाप शायद 'श्रीरामशरणम्' मिशन के अगुवा भक्त हंसराज महाराज की दी हुई है।

1.1.3 शिक्षा :- सन 1952 में चौथी पास कर हरियाणा पब्लिक स्कूल में 1952 में ही पाँचवी में दाखिला लेकर मार्च 1953 में पाँचवी कक्षा पास कर ली। सुदर्शन एक अच्छा विद्यार्थी था। मेधावी होने के कारण पाँचवी से ही कक्षा में प्रथम/द्वितीय स्थान पाते हुए 1958 में गवर्नमेंट हाईस्कूल गोहाना से दसवी कक्षा पास की। 624/850 अंक लेकर अपने स्कूल में प्रथम ही नहीं, तहसील के सभी स्कूलों में प्रथम स्थान पा लिया। विषय थे - अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, ड्राईंग, हिंदी, इतिहास - भूगोल।

भाटियाजी के शब्दों में - "मैं हर वर्ष हिंदी का कोई न कोई इम्तेहान देने लगा। मई, जून में पोलीटेक्निक में छुट्टियाँ होती। मार्च तथा जून में पंजाब विश्वविद्यालय के रत्नभूषण प्रभाकर आदि के इम्तेहान होते। जूनवाली परीक्षा में मैं बैठने लगा। रत्न (प्रथम डिवीजन), भूषण (प्रथम डिवीजन) तथा प्रभाकर (सैकंड डिवीजन) पास करने में मेरे उस स्कूल के अभ्यास ने सहायता की। कोई स्कूल नहीं। कोचिंग नहीं। टीचर नहीं। किताबें भी नहीं। एक महिना 'गाइड' पढ़ता। परीक्षा में बैठता तो कई-कई शीटें भर देता। क्या लिखता, पता नहीं। मैं पास होता गया!"[1]

उन्हीं दिनों पता चला कि पंजाब में नौकरी के लिए पंजाबी का ज्ञान जरूरी है। भाटियाजी ने मैट्रिक में पंजाबी एडीशनल सब्जैक्ट का दाखिला भर दिया। केवल स्वर-व्यंजन लिखे। इन्हीं को लिखने का खूब अभ्यास किया। कोई किताब नहीं खरीदी। पढ़ी भी नहीं और परीक्षा में जा बैठे। हिंदी की जानकारी के बल पर 'गुरुमुखी' में लिखते गए। खूब लिखा। जब परिणाम आया तो उनके अंक थे 90/150 जो कि फर्स्ट डिवीजन थी।

पोलीटेक्निक में रहकर उन्होंने इंजीनियरिंग के साथ एफ. ए. (अंग्रेजी) की अच्छी तैयारी की और क्लीयर कर लिया। जब उन्होंने तीन साल का नैशनल डिप्लोमा पास किया (1961 जून) में। तब उनके पास अन्य पाँच सर्टिफिकेट थे। वे बी. ए. (अंग्रेजी) तथा अन्य सब्जैक्ट लेकर सर्विस में आकर स्नातक हो गए। बाद में उन्होंने इंजीनियरिंग में भी स्नातक की डिग्री पाई, वह भी इलैक्ट्रीकल लाईन की नहीं बल्कि, एरोनॉटिकल इंजीनियरिंग की। उन्होंने यह सब अपने अध्ययन के बल पर किया। कोई गाईड नहीं, कोई कोचिंग नहीं। नौकरी में रहते हुए ही डबल ग्रेजुएशन कर ली। भाटिया जी इलैक्ट्रकल इंजीनियर, ऐरोनॉटिकल इंजीनियरिंग, पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन एवं सोशियोलॉजी जैसे विभिन्न विषयों में तीन बार स्नातक हुए हैं।

---

1. सुदर्शन भाटिया का पत्र - दि. 7/5/2010.

1.1.4 विवाह :- नवभारत में 1958-59 में एक बहस छिड उठी की 'प्रेम-विवाह' करना चाहिए या नहीं। सुदर्शन ने इसमें लिखा था - 'यह वह पेड है, जो इसके नीचे बैठता है, वह न तो छाया पा सकता है, न ही फल।' इसके सारांश में यह भी कहा था कि अपने व्यवहार तथा अडजस्टमेंट नेचर से ही विवाह सफल या विफल होते हैं। फिर भी प्रेम विवाह कम कामयाब होते हैं, जबकि अरेंजड मॅरिज अधिक कामयाब। और समय ने ऐस पलटा खाया, मण्डी में तैनाती के समय गोहाना से आए इस युवक ने जगदीश कौर नामक युवती से अन्तर्जातीय प्रेमविवाह किया और खूब सफल भी रहा। उन्हें छाया तथा फल दोनों मिल रहे हैं। इस विवाह का खूब विरोध हुआ अब दोनों पक्ष घी-शक्कर की तरह हैं।

1.1.5 नौकरी :- विद्युत यांत्रिकी में शिक्षा पूरी करने के बाद सुदर्शन भाटिया ने सन 1961 से बतौर एस. डी. ओ. पंजाब व हिमाचल में कार्यरत रहे और सन 1998 में बतौर अधिशासी अभियंता (एक्स-इ एन) सेवानिवृत्त हुए।

1.2 कृतित्व :

सुदर्शन भाटिया आधुनिक काल के कथाकार के रूप में विख्यात हैं। 10 वर्षों से भी कम समय में पौने 200 पुस्तकें लिखने, देश की 325 पत्र-पत्रिकाओं में 3900 से भी अधिक बार लेख छपने, राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों के लिए पत्रकारिता करने अनेक स्मारिकाओं का संपादन करने तथा एक हिंदी साप्ताहिक के लिए बतौर उपसंपादक का दायित्व निभाने का श्रेय सुदर्शन भाटिया को प्राप्त है। जीवन के 71 बसंत देख चुके हिमाचल प्रदेश विद्युत परिषद में अनेक पदों पर कार्यरत रह कर जून 1998 में अधिशाषी अभियंता के पद से सेवानिवृत्त हो चुके सुदर्शन भाटिया अनेकानेक विधाओं में लिख चुके हैं। उनका लेखन कार्य अब भी द्रुत गति से जारी है।

सुदर्शन भाटिया ने विभिन्न विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है। उन्होंने उपन्यास, कहानीसंग्रह, ज्ञानविज्ञान, लघुकथाएँ, व्यंग्य व्यक्तित्व, विकास, शिशुपालन, स्त्री-शिक्षा, जीवनी, आधुनिक साहसिक व्यक्मितत्व, इतिहास धर्म एवं संस्कृति, पर्यावरण, प्राकृतिक चिकित्सा, संस्कृति उत्थान से जुडी पुस्तकें, देशभक्ति, व्यावहारिक विज्ञान, नारी सौंदर्य, योग शिक्षा इतनाही नहीं बागवानी तक का साहित्य प्रकाशित कर अपने बहुआयामी व्यक्तित्व को अभिव्यक्त किया।

सुदर्शन भाटिया को बचपन से ही कविता लेखन तथा चित्रकला में रूचि थी। 'नवभारत टाइम्स' में छठे दशक में प्रकाशित उनकी कविता का प्रसंग रोचक है। शीर्षक था - 'शाप दे

दूँगा'। नौंवी कक्षा में पहुँचते-पहुँचते कविता तथा चित्रकारी दोनों छूट गए। कारण यहीं की उन्हें किसी ने उत्साहित नहीं किया। किसीने यह नहीं कहा कि कहाँ गलत हो और कितने ठीक हों। माहौल ही ऐसा था कि दोनों रूचियों का गला घोंट दिया गया।

पुराने साहित्यकार जानते हैं, कि 'वीर प्रताप' एक ऐसा अखबार रहा है, जिसने नए लेखकों को भी उत्साह दिया तथा उनको स्थापित लेखक बन डाला। सुदर्शन भाटिया ने नवभारत टाइम्स के साथ 'वीर-प्रताप' के लिए लिखना जारी रखा। ''खिलते फूल महकती कलियाँ'' उनका लघु उपन्यास 'वीर-प्रताप' में छपा जो राजनीति पर एक बड़ा कटाक्ष था।

सुदर्शन भाटिया के पास जो समाचार पत्रों की कतरने हैं, उनसे यह सिद्ध होता, कि उनकी रचनाएँ देशभर के सवातीन सौ पत्र-पत्रिकाओं में छप रही है। देशभर की पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन हो रहा है, उनमें से कुछ पत्रिकाओं के नाम इसप्रकार है, उत्तर उजाला, नैनीताल, दैनिक पंजाब केसरी, दिल्ली/जालंधर/पालमपुर, साप्ताहिकहिमाचल केसरी, हिमाचल रिपोर्टर, पालमपुर, नवीन दुनिया, जबलपुर, गोरखपुर, केसरी, हिमाचल दर्पण, पब्लिक ऐशिया, दिल्ली, दैनिक जागरण, हमारी पत्रिका, नई दुनिया, भोपाल, राजस्थान, पत्रिका, राजदर्पण, राष्ट्र-चेतना आदि।

पालमपुर में हर वर्ष होने वाले होली मेले की स्मारिका का संपादन सुदर्शन कई वर्षों से कर रहे हैं। सुदर्शन भाटिया जी का साहित्य बहुआयामी है। उनका कृतित्व निम्नप्रकार का हैं-

1.2.1 कहानी :- भाटिया जी द्वारा लिखित कहानी संग्रह इसप्रकार हैं -

अ. नं.	कहानी संग्रह का नाम	प्रकाशित वर्ष
1	खूजर पर अटका	1994
2	रिश्तों की कसक	1995
3	विस्फोट	1995
4	हिमाचल से जुडी कहानियाँ	1996
5	तिरस्कार मुक्त	1997
6	युगों-युगों तक	1997
7	लौट गई मौत	1999
8	एक और स्वर्ग	2000

9	चीकने पात	2000
10	कमल पुष्प	2004

इसमें से 'खजूर पर अटका' कहानी संग्रह कहानी लेखन के क्षेत्र में एक सफल प्रयास है। संग्रह की सभी कहानियों का कथानक मुख्य रूप से पारिवारिक एवं सामाजिक है - नई नौकरी प्राप्त अविवाहित नवयुवकों को बाहर मकान ढूँढने में क्या कठिनाई आती है। लडकियाँ जब नौकरी के लिए घर से दूर बाहर जाती है तो उन्हें किस दौर से गुजरना पडता है और कुछेक किसप्रकार पिछले सम्बन्धों को तिलांजलि दे नवीन सम्बन्ध स्थापित करती हैं।

भाटियाजी का दूसरा कहानी संग्रह 'रिश्तों की कसक' में 10 कहानियाँ संकलित हैं। इन कहानियों में कथाकार ने राजनीति, भ्रष्टाचार, व्यभिचार, प्रेम-रोमांस और मानवीय रिश्तों में पड रही दरारों को लेकर अपना कथा-संस्कार रचा है।

'विस्फोट' नामक कहानी-संग्रह में 22 कथा-प्रसंगों को सहज, सरल भाषा में अभिव्यक्ति प्रदान की है। श्री. भाटिया ने महाभारत, उपनिषद, रामकथा तथा कृष्णकथा के प्रसंगों को भी लिया है। तथा द्वापर युग, त्रेता युग की कथाओं को भी प्रेरक रूप में व्यक्त किया है।

'हिमाचल से जुडी कहानियाँ' इस संग्रह में भाटिया जी ने हिमाचल से सम्बद्ध ऐतिहासिक और लोकप्रचलित कथाओं को समेटने की कोशिश की है। प्रस्तुत कहानी संग्रह में नौ कहानियों के माध्यम से हिमाचल की लोक प्रचलित मान्यताओं, कथाओं, विश्वासों और आस्थाओं को कागज पर उतारने की कोशिश की गई है।

'तिरस्कार मुक्त' कहानियों में पौराणिक एवं ऐतिहासिक दस आख्यानों को श्री. भाटिया ने अत्यंत रोचक एवं प्रभावी शैली में अपनी कथात्मक सूझ-बूझ से अभिव्यक्त किया है।

'लौट गई मौत' और 'युगों युगों तक' महाभारत और रामायण को आधार बनाकर लिखी गई कहानियाँ हैं। कुछ में पौराणिक आधार भी हैं। 'लौट गई मौत' संग्रह में 'गुरू दक्षिणा का औचित्य' कहानी में प्रश्नों के कटघरे में खडा करते है और अपनी उद्भावना का परिचय देते हैं। 'युगों-युगों' तक में भारतीय पुराण साहित्य से प्रेरित बारह कहानियाँ संग्रहित हैं। शरीर को आम तौर पर नाशवान कह कर नगण्य और उपेक्षा का भाव बना दिया जाता है, परंतु कथाकार का उद्देश्य है, मानव जीवन के शाश्वत मूल्यों और चिंतन सत्य को उद्घाटित करना।

'एक और स्वर्ग' में भाटिया जी ने नए प्रयोग करते हुए कथानकों के विशिष्ठ अंगों को व्यंग्य के धरातल पर स्पर्श किया है। कहीं कोई धार्मिक प्रसंग है, तो कहीं पर पत्नी सुख जैसी कहानी भी उपस्थित है।

'चीकने पात' कहानी संग्रह में कुल 11 कहानियाँ संकलित हैं। ये कहानियाँ कुछ हटकर नए प्रयोग करती प्रतीत होती हैं। ऐतिहासिक एवं पौराणिक प्रसंगों, घटनाओं पर कहानियाँ लिखना कोई नया नहीं है। भाटिया जी ने इन कहानियों की यथार्थता को बचाते हुए कल्पना के रंगों से सजाने की कोशिश की है।

1.2.2 उपन्यास :- सुदर्शन भाटिया जी ने कुल 5 उपन्यास लिखे हैं। उनमें सामाजिक, ऐतिहासिक, व्यंग्यात्मक आदि उपन्यास हैं। वे निम्नप्रकार है -

1.2.2.1 सामाजिक उपन्यास :-

1.	कल्लो	-	1994
2.	सुलगती बर्फ	-	1997
3.	पतिव्रता	-	2008

सुदर्शन भाटिया द्वारा लिखित 'कल्लो' उपन्यास में लेखक ने ग्रामीण समस्याओं को उठाया है। इसमें ग्रामीण परिवेश में घटित घटनाओं का चित्रण मिलता है।

'सुलगती बर्फ' उपन्यास में 'प्रेम और जीवन संघर्ष' को दर्शाया गया है।

'पतिव्रता' उपन्यास में भाटिया जी ने बड़ी सुघडता से नारी की महिमा को प्रतिपादित किया है। साहित्यकार सुदर्शन भाटिया ने बडी पैनी दृष्टि से परिवर्तित स्थितियों में नारी के प्रति भारतीय मूल्यों को स्थापित किया है।

1.2.2.2 ऐतिहासिक उपन्यास :-

1.	विदूषक	-	2005
2.	द्रौपदी की आत्मकथा	-	2008

'विदूषक' उपन्यास में सुदर्शन भाटिया जी का नायक तेनालीराम है, जो कृष्णदेव राय के दरबारी रत्नों में एक था। अँग्रेजी साहित्य में तेनाली राम प्रसिद्ध हुआ है, परंतु औपन्यासिक कृति की रचना कर सुदर्शन भाटिया जी ने इस कथा को एक अतिरिक्त आयाम दिया है।

1.2.2.3 व्यंग्यात्मक उपन्यास :-

1.	थाली का बैंगन	-	1994
2.	उठा पटक	-	1995
3.	लगी है भागमभाग	-	1995
4.	सत्ता संघर्ष	-	2010

'थाली की बैंगन' भाटिया जी की इस कृति में 30 अध्याय है। जो पाँच खंडों में विभाजित है। 'थाली का बैंगन' जो धूर्त प्रांत परिषद के नेता का चुनाव चिह्न है।

'उठा पटक' उपन्यास में राजनैतिक विसंगतियों और उसमें रोजमर्रा हो रहे अवमूल्यन की स्थितियों की पारदर्शी ढंग से चित्रित किया गया है।

'उठा पटक' और 'लगी है भागमभाग' दोनों व्यंग्य उपन्यासों का मूल कथानक इस देश में व्याप्त चुनाव धांधलियों और जीत के लिए अपनाए जाने वाले हथकंडे है! किस तरह से उम्मीदवार अपने चुनाव प्रतिद्वंद्विंयों का चरित्र हनन करते हैं और किस तरह से सत्ता प्राप्त करने की लिप्सा व्यक्ति का पतन करा देती है। इसकी सजीव और सटीक प्रस्तुति इन दोनों कृतियों में ही पायी है।

'सत्ता संघर्ष' उपन्यास में भाटिया जी ने एक नए देश 'उलटस्थान'की कल्पना कर, इसमें हो रहे चुनावी संग्राम का सुरूचि पूर्ण वर्णन किया है। 'जोड-तोड' विधान सभा के एक चुनावी गढ़ 'विनाश चुनाव क्षेत्र' से एक ही परिवार के चार सदस्यों ने इस महाभारत में उतर कर चुनाव जीतने के लिए सभी रिश्ते नाते दांव पर लगा दिए। पति-पत्नी, पुत्र तथा भतीजा-चारों ने इस चुनाव में एक-दूसरे की पोल खोलने में जरा भी कमी नहीं आने दी। इनके चुनाव चिह्न भी क्रमशः कुर्सी, चारपाई, रेडियो तथा स्टूल थे। धर का मुखिया पूर्व मुख्यमंत्री भी है। यह उपन्यास पच्चीस भागों में विभक्त है तथा पूरी तरह हास्य, व्यंग्य और कटाक्ष से भरा है।

1.2.3 लघुकथा :- कहानी संग्रह तथा उपन्यास के साथ-साथ भाटिया जी ने लघुकथाएँ भी लिखी हैं। उनकी प्रकाशित लघुकथाएँ इसप्रकार है -

अ. नं.	लघुकथा का नाम	प्रकाशित वर्ष
1	खण्डहर	1997
2	तूफान	1996

3	घरौंदें में घोसला	1997
4	काली लडकी	1998
5	पश्चाताप की आग	2002
6	काटो तो खून नहीं	2000
7	रथ का पहिया	2005
8	कुंवारी विधवा	2005
9	शिलालेख	2006
10	कलियुग की लघुकथाएँ	2007

'खण्डहर' सुदर्शन भाटिया का नया, तरोताजा तथा मौलिक लघुकथा संग्रह है। 'खण्डहर' कथाकार की इस युग द्रष्टा एवं भविष्य सृष्टा छवि का परिचायक है। इस लघु कथा संग्रह में छोटी छोटी सत्तर कहानियाँ हैं। हर कहानी में कुछ न कुछ ऐसा है, जो उसकी जीवंतता और अविस्मरणीयता का कारण बनता है। प्रेरक बिंदुओं को कहानीकार ने अपनी कलात्मक दृष्टि को समझा और पकडा है।

'तूफान' लघु कथा संग्रह में 50 से ज्यादा कथाएँ समेटे हुए हैं। इस संग्रह में सामाजिक कथानकों के साथ-साथ अनेक पौराणिक और ऐतिहासिक कथानकों को भी कथाओं का आधार बनाया गया है।

'सिसकियाँ' भाटिया जी का एक और लघुकथा संग्रह है। इस संग्रह में 50 से अधिक लघुकथाएँ हैं। कुछ कथाएँ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि वाली भी है। लेखक ने कथाओं को यथास्थिति और संभवत: यथा शब्द स्वीकार कर शामिल किया है।

'काली लडकी' लघु कहानी संग्रह एक निश्चित घटना पर आधारित है। जो हृदय पर अकस्मात अलग छाप छोड जाती है। प्रस्तुत कहानी संग्रह में कहानीकार ने अपनी अनुभूतियों और संवेदनाओं को नया रूप दिया है।

'काटो तो खून नहीं' लघुकथा संग्रह में सुदर्शन भाटिया जी ने जीवन की अनेक विडंबनाओं और विसंगतियों को सर्जनात्मक आयाम दिया है। इनकी कहानियों में जो संकेत मिलते हैं, वे जीवनधारा को प्रोत्साहित करते हैं।

'पश्चाताप की आग' लेखक का नवीनतम लघुकथा संग्रह है। इसकी पृष्ठभूमि यथार्थ पर आधारित है। यह वर्तमान युग न तो अतीत से जुडा लग रहा हैं और न भविष्य के लिए ही कोई संकेत देता है कि आनेवाला कल हँसता हुआ आएगा।

'रथ का पहिया' भी भाटिया जी का नवीनतम लघु कथासंग्रह है। इसमें सौ के आसपास कथाएँ हैं।

'उत्तराधिकारी' भाटिया जी रचित लघुकथाओं का महत्त्वपूर्ण संग्रह है। महत्त्वपूर्ण इसलिए कि लघुकथा की लंबी-शृंखला में अपनी शिल्प-शैली की नवीनता लिए एक मानक कडी के रूप में जुडकर यह संग्रह उसकी समृदधि को प्रशस्त करता है।

1.2.4 जीवनी :- भाटिया जी जीवनीकार के रूप में भी प्रसिद्ध हैं। उन्होंने अनेक महान व्यक्तियों पर जीवनियाँ लिखी है। वे इसप्रकार है -

अ. नं.	जीवनी का नाम	प्रकाशित वर्ष
1	युगावतार रामकृष्ण परमहंस	2000
2	भारतरत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद	2004
3	महर्षि अरविंद	2005
4	महर्षि दयानंद	2004
5	दस नायक	2006
6	डॉ. कलाम को सलाम	2007
7	सोनिया गांधी : एक संघर्षमय व्यक्तित्व	2006

1.2.5 अन्य साहित्य :- सुदर्शन भाटिया जी ने कहानी, उपन्यास, लघुकथा तथा जीवनी के साथ-साथ अन्य साहित्य भी लिखा है। उसमें आधुनिक साहसिक व्यक्तित्व, इतिहास धर्म एवं संस्कृति, पर्यावरण, प्राकृतिक चिकित्सा/स्वास्थ्य, संस्कृति उत्थान से जुड़ी पुस्तकें, देशभक्ति/ राष्ट्रनिष्ठा, व्यावहारिक विज्ञान, राजनीति, रिपोर्टिंग, शिशुपालन/स्त्री शिक्षा, विज्ञान ज्ञान क्विज, नारी सौंदर्य और योगशिक्षा आदि अनेक विषयों पर उन्होंने अपनी लेखनी चलाई है।

1.2.5.1 आधुनिक साहसिक व्यक्तित्व :

1. अंतरिक्ष बाला कल्पना चावला
2. डॉ. कल्पना चावला

3. प्रथम भारतीय अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा

1.2.5.2 इतिहास धर्म एवं संस्कृति :

1. महाभारत कथा
2. उपनिषदों की कथाएँ
3. पवित्र गंगा भागीरथी
4. सतयुग दर्पण
5. कलियुग दर्पण
6. महाभारत की रोचक कथाएँ
7. प्रेरक प्रसंग - महापुरुषों के संग
8. भारतीय लोकजीवन तथा संस्कृति के स्रोत
9. द्वापरयुग की श्रेष्ठ कहानियाँ
10. कलियुग की श्रेष्ठ कहानियाँ
11. देवभूमि पर पांडव
12. आर्य समाज के सशक्त स्तम्भ

1.2.5.3 पर्यावरण :

1. वन संरक्षण तथा पर्यावरण
2. प्रदूषण मुक्त धरती
3. प्राकृतिक पर्यावरण तथा मानव
4. नैसर्गिक पर्यावरण संतुलन
5. बिन पानी सब सून
6. कैसे रखे पर्यावरण सुरक्षित
7. जल ही जीवन है : मत होने दें प्रदूषित
8. पर्यावरण प्रदूषण
9. भारतीय समाज तथा पर्यावरण
10. सचेत रहे : सुधरेगा पर्यावरण

1.2.5.4 प्राकृतिक चिकित्सा / स्वास्थ्य :

1. प्रकृतिद्वारा स्वास्थ्य
2. प्रकृति स्वास्थ्य और सौंदर्य
3. सच्चा सुख निरोगी काया
4. रोग पहचानें उपचार जानें
5. रोग और उनके घरेलु उपचार
6. चिकित्सा के प्राकृतिक साधन
7. जीवन रक्षा के घरेलु उपाय
8. आहार द्वारा उपचार
9. कैसे रहे निरोग
10. विश्वव्यापी शोध

1.2.5.5 संस्कृति उत्थान से जुडी पुस्तकें :

1. महान नीतिज्ञ - दासी पुत्र विदुर
2. वेदों के मंत्र द्रष्टा - महर्षि अगस्त्य
3. शुकदेव के जन्म की विचित्र कथाएँ
4. प्रात: स्मरणीय भक्त प्रहलाद
5. भक्त श्रेष्ठ बालक ध्रुव
6. दिव्य फल तथा गोकर्ण
7. शबरी की कुटियों में श्रीराम
8. आयोध्या नरेश सत्यवादी हरिश्चंद्र
9. वसिष्ठ विश्वामित्र में घमासान
10. अहिंसा और सत्य के पुजारी भगवान महावीर
11. संत ज्ञानेश्वर

1.2.5.6 देशभक्ति/राष्ट्रनिष्ठा/राष्ट्र गौरव :

1. भारतीय वीर तथा साहसी किशोरियाँ
2. भारत प्रसिद्ध वीरांगनाएँ

3. हमारा राष्ट्र तथा महान आत्माएँ
4. शूरवीर भारतीय बालक
5. महापुरुषों के प्रेरक प्रसंग

1.2.5.7 व्यावहारिक विज्ञान / जीवन उपयोगी :

1. सफलता चूमेगी कदम बच्चों के भी
2. जीवनोपयोगी सफलता के रहस्य
3. कैसे सीखें युवतियाँ निर्भय जीना
4. विश्व प्रसिद्ध महिलाएँ
5. ज्ञान-विज्ञान की बातें
6. कैसे निखारे बच्चों का व्यक्तित्व

1.2.5.8 राजनीति : रिपोर्टिंग :

1. भारतीय राजनीति का सच
2. तीखी नजर

1.2.5.9 शिशुपालन/स्त्री शिक्षा :

1. गर्भावस्था और शिशुपालन
2. संपूर्ण गृह विज्ञान
3. सुनो बेटी
4. शिशुपालन और माँ के दायित्व
5. बिटिया बनो सयानी
6. मायके से ससुराल तक
7. ऐसे बने सफल गृहिणी
8. नारी और गृह विज्ञान
9. बड़ी माँ समझाए घर कैसे चलाएँ

1.2.5.10 विज्ञान, ज्ञान-क्विज, जानकारियाँ :

1. विश्वविख्यात वैज्ञानिक तथा उनके आविष्कार
2. सामाजिक ज्ञान प्रश्नोत्तरी

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

3. महाभारत प्रश्नोत्तरी
4. प्रतिभा बढाएँ करोडों पाएँ (1, 2 खण्ड)

1.2.5.11 सच्ची प्रेरक घटनाओं पर आधारित :

1. हुआ था ऐसा भी
2. सच : द ट्रुथ
3. प्लीज बिलीव मी
4. रोमांचित करती सच्चाइयाँ
5. लोग : कैसे कैसे
6. मानों या न मानों
7. आश्चर्यकारक किंतु सत्य

1.2.5.12 बागवानी :

1. हरी-भरी गृह वाटिका
2. सफल गृह वाटिका
3. खेतीबाडी शौक भी, व्यवसाय भी

1.2.5.13 नारी सौंदर्य :

1. अद्‌भुत सौंदर्य तथा स्वस्थ्य शरीर
2. नारी सौंदर्य विज्ञान
3. कम्पलीट लेडिज गाईड
4. प्राकृतिक प्रसाधन और महिलाएँ

1.2.5.14 योग शिक्षा :

1. भारतीय योग

1.2.6 सम्मान एवं पुरस्कार :

सुदर्शन भाटिया जी को कुछ सामाजिक तथा साहित्यिक संस्थानों ने अनेक बार सम्मानित किया है। उनके विस्तृत लेखन के आधार पर ही उन्हें पालमपुर तथा यहाँ से बाहर अनेक बार सम्मानित किया गया। उन्हें जो सम्मान मिले वे इसप्रकार हैं -

1. इन्टर नेशनल रोटरी पालमपुर - 1996
2. हिमाचल केसरी अवार्ड - 1997
3. हिमाचल रिपोर्टर द्वारा सम्मान - 1998
4. आचार्य की मानद उपाधि - 1999
5. हिम साहित्य परिषद राज्य स्तरीय सम्मान - 1999
6. अखिल भारतीय लघुकथा प्रतियोगिता सम्मान - 1999
7. साहित्य श्री सम्मान - 2000
8. बीसवीं शताब्दी सम्मान - 2000
9. अमेरिकन बायोग्राफिकल इन्स्टिटयूट अवार्ड - 2000
10. पद्मश्री डॉ. लक्ष्मीनारायण दुबे स्मृति सम्मान - 2001
11. रामवृक्ष बेनीपुरी जन्मशताब्दी अवार्ड - 2002
12. राजभाषा रत्न सम्मान - 2003
13. सुभद्राकुमारी चौहान जन्मशताब्दी सम्मान - 2004
14. हिमोत्कर्ष हिमाचल श्री सम्मान - 2004
15. पद्मश्री सोहनलाल जन्मशताब्दी सम्मान - 2005
16. अखिल भारतीय भाषा सम्मान - 2006
17. अथक लेखन सम्मान - 2006
18. साहित्य उपासक सम्मान - 2006
19. साहित्य विजयश्री सम्मान - 2007
20. हिंदी साहित्य प्रहरी सम्मान - 2007
21. महादेवी वर्मा जन्मशताब्दी सम्मान - 2007
22. काका हाथरसी सम्मान - 2007

निष्कर्ष :

समाज का सर्वाधिक संवेदनशील प्राणी साहित्यकार को ही माना जाता है। युगबोध की प्रधानता और सामाजिक जागरूकता उसे जीव-जगत की विभिन्न चुनौतियों और कठिनाइयों के प्रति सचेत करती है। वह अपनी अनुभूति की सूक्ष्म परतों से सामाजिक परिवर्तन को आँकता

चलता है। प्राचीन एवं नवीन यथार्थ एवं काल्पनिक, ऐतिहासिक तथा सामयिक और तुलनात्मक आदि अनेक प्रसंगों का उल्लेख करते हुए साहित्यकार अपने समय की संवेदना को पहचानता है। साहित्य की विविध विधाओं के माध्यम से वह चरित्रों, समस्याओं, घटनाओं और संदर्भों का मूल्यांकन करते हुए उसे सामयिक परिप्रेक्ष्य में व्याख्यायित करता चलता है। परिणामत: वह युग द्रष्टा एवं भविष्य सृष्टा के नाते युगीन सत्य को अपने व्यक्तित्व और दर्शन के अनुरूप डालकर एक नया रूप प्रदान करता है।

वर्ष 1940 में जन्मे सुदर्शन भाटिया जी को शुरू से ही लेखन का शौक था। स्कूल में पढाई के दौरान ही उन्होंने कविताएँ लिखनी शुरू की। लेकिन पढाई व दूसरी व्यस्तताओं के कारण वह लेखन के इस शौक को ज्यादा समय नहीं दे पाए। वर्ष 1961 में सुदर्शन भाटिया जी को हिमाचल प्रदेश राज्य विद्युत बोर्ड में नौकरी मिल गई। नौकरी के बाद उनकी लेखन कला दब सी गई। वक्त न मिलने के कारण वह चाहकर भी कुछ नहीं लिख पाए। करीब 37 साल की नौकरी के बाद सुदर्शन भाटिया जी राज्य विद्युत बोर्ड से बतौर अधिशाषी अभियंता सेवानिवृत्त हुए। सेवानिवृत्ति के बाद उनके अंदर लेखन का शौक फिर जाग उठा।

वर्ष 1996 में उन्होंने उपन्यास 'कल्लो' से अपने लेखन के सफर की शुरूआत की। कल्लो उनका 1994 में लिखा पहला उपन्यास है। इसके बाद वह इसी धुन में खो गए और 8 सालों में एक के बाद एक करीब एक सौ चौदह पुस्तकें लिख डाली।

सुदर्शन भाटिया जी ने सामाजिक, ऐतिहासिक तथा व्यंग्यात्मक उपन्यास के अलावा उन्होंने कहानी, लघुकथा, जीवनी, नारी सौंदर्य, तथा पौराणिक विषयों पर किताबें लिखी। भाटिया जी को उनकी लेखन कला के लिए वर्ष 1999 में जैमिनी अकादमी ने आचार्य की मानद उपाधि से सम्मानित किया।

अभियंता की नौकरी करते हुए साहित्य लेखन करना सामान्य बात नहीं है। सुदर्शन भाटिया की कहानी संग्रह, लघुकथा संग्रह, विज्ञान, देशभक्तीपरक छोटी-छोटी पुस्तकें नई पीढी को प्रेरणा देती रहेगी। सामाजिक, धार्मिक, वैज्ञानिक, प्राकृतिक, प्रेरक घटनाओं से सचेत होकर भाटिया ने जीवन के सभी अंगों को स्पर्श करनेवाली पुस्तकें लिखकर हिंदी भाषा को समृद्ध करने का प्रयास किया है।

-----x-----